कथा सरिता

उनको ही बचाऊंगा...

एक बार यशोदा माँ यमुना में दीप दान कर रही थीं, वो पत्ते में दीप रखकर प्रवाह कर रही थीं। उन्होंने देखा कि कोई दीप आगे नहीं जा रहा...।

ध्यान से देखा तो कान्हा जी एक लकड़ी लेकर जल से सारे दीप बाहर निकाल रहे थे।

तो माँ कहती है: 'लल्ला! तू ये का कर रहो है...?'

कान्हा कहते हैं: 'मैया, ये सब डूब रहे थे, तो मैं इन्हें बचा रहा हूँ...।'

माँ ये सब सुनकर हँसने लगी और बोली: 'लल्ला, तू केको केको बचायेगा..?'

ये सुनकर कान्हा जी ने बहुत सुन्दर जवाब दिया: 'माँ, मैंने सबको ठेको थोड़ी न ले रखो है। जो मेरी ओर आएंगे उनको बचाऊंगा...।' इसलिये हमेशा भगवान के सम्पर्क मे रहें...।

जागृति से जीना सीखें

एक सेठ के घर में चोर घुस गया। कमरे में कुछ खड़खड़ की आवाज़ हुई तो सेठानी चौंक उठी। उसने अपने पति को जगाकर कहा: 'मुझे लगता है कि अपने घर में कोई चोर घुसा आया है।' सेठ ने कहा: 'हाँ-हाँ ज़रूर आया होगा, रात के समय और कौन आ सकता है!' यह कहकर उसने चादर सिर तक तान ली। सेठानी ने दरवाज़े के छिद्र में से देखा - चोर ने तिजोरी खोल ली है और रुपये और जेवर आदि कपड़े में बांध रहा है। सेठानी ने पति से कहा: 'जल्दी उठो, उसने सारी सम्पत्ति कपड़े में बांध ली है।' सेठ बोला - 'मैं जानता हूँ, वह आया है, तो कुछ लेकर ही जाएगा।' सेठानी बोली: 'हम लुट गए हैं।' सेठ ने कहा: 'मैं जानता हूँ, मगर अब कोई उपाय भी तो नहीं है।' इस बार सेठानी को आवेश आ गया। बोली - 'तुम बस जानते ही रहो। अब मुझे ही कुछ करना पड़ेगा।'

वह दौड़कर घर के मुख्य द्वार पर पहुंचकर ज़ोरों से चिल्लाई: 'बचाओ! चोर-चोर!' चोर डरकर गठरी को वहीं फेंक कर भाग खड़ा हुआ। सेठानी ने गठरी अंदर लेकर पति से कहा: 'मैंने चोर को भगा दिया है।' सेठ उठकर बोला: 'मैं जानता था, तुम कमरे से बाहर गई हो तो बचाव का कुछ-न-कुछ उपाय करके ही आओगी।'

सेठानी ने अपना सिर थाम कर कहा: 'जानते थे तो फिर साथ क्यों नहीं दिया?'

इसी तरह आज्ञा हम सब जानते हैं, लेकिन ज्ञान को आचरण में उतार नहीं पाते। ज्ञान केवल जान लेने मात्र से कुछ भी लाभ होने वाला नहीं है। उदाहरण के तौर पर, हम सर्प को भी जानते हैं, इसलिए उसके मुँह को तो क्या पूँछ को भी हाथ नहीं लगाते। बिच्छू के स्वभाव से परिचित होने के कारण हम उसे अपनी जेब में रखकर नहीं घूमते, क्योंकि हमें यह ज्ञान है कि ये विषैले जीव हैं। हम स्वप्न में भी इन्हें पकड़ने की भूल नहीं करते।

आज हमारे तन में जितने रोग नहीं हैं, उससे कहीं अधिक रोग हमने अपने मन में पाल रखे हैं। हमारा चिंतन सकारात्मक कम और नकारात्मक अधिक हो गया है। जीवन की यह मस्ती ही जीवन की कश्ती को डुबो देगी। अभी हमारे पास समय है। हम जागें, अंधकार से बाहर निकलें और जीवन को जागृति और सत्यता के साथ जियें।

अहम् नहीं... 'अर्हम'

एक बार रेलगाड़ी में लोग यात्रा कर रहे थे। एक व्यक्ति खड़ा हुआ और खिड़की खोल दी, थोड़ी ही देर में दूसरा यात्री उठा और उसने खिड़की बंद कर दी। पहले को उसका यह बंद करना नागवार गुज़रा और उठ कर खिड़की पुनः खोल दी।

एक बंद करता दूसरा खोल देता। नाटक शुरू हो गया। यात्रियों का मनोरंजन हो रहा था, लेकिन अंततः सभी तंग आ गये। टी टी को बुलाया गया, टी टी ने पूछा- 'महाशय! यह क्या कर रहे हो? क्यों बार बार खोल-बंद कर रहे हो?' पहला यात्री बोला- 'क्यों न खोलूं, मैं गर्मी से परेशान हूँ, खिड़की खुली ही रहनी चाहिए।'

टी टी ने दूसरे यात्री को कहा- 'भाई! आपको क्या आपत्ति है, खिड़की खुली रहे तो?'

इस पर दूसरे यात्री ने कहा - 'मुझे ठंड लग रही है, मुझे ठंड सहन नहीं होती। टी टी बेचारा परेशान, एक को गर्मी लग रही है तो दूसरे को ठंड।

टी टी यह सोचकर खिड़की के पास गया कि कोई बीच का रास्ता निकल आए। उसने देखा और मुस्करा दिया। खिड़की में शीशा था ही नहीं। वहाँ तो मात्र फ्रेम थी।

वह बोला- 'कैसी गर्मी या कैसी ठंडी? यहाँ तो शीशा ही गायब है, आप दोनों तो मात्र फ्रेम को ही ऊपर नीचे कर रहे हो!'

मित्रों, वस्तुतः दोनों यात्री न तो गर्मी और न ही ठंडी से परेशान थे। वे परेशान थे तो मात्र अपने अभिमान से। वे अपने अहं पोषण में लिप्त थे, गर्मी या ठंडी का अस्तित्व ही नहीं था।

अधिकांश कलह मात्र इसलिये होते हैं कि अहंकार को चोट पहुँचती है, और आदमी को सबसे ज़्यादा आनंद दूसरे के अहंकार को चोट पहुँचाने में आता है। साथ ही सबसे ज़्यादा क्रोध अपने अहंकार पर चोट लगने से होता है। जो दूसरों के अहंकार को चोट पहुँचाने में सफल होता है, वह मान लेता है कि उसने बहुत ही बड़ा गढ़ जीत लिया, वह यह मानकर चलता है कि दूसरों के स्वाभिमान की रेखा को काट पीट कर ही वह सम्मानित बन सकता है। किन्तु परिणाम अज्ञानता भरे शर्म से अधिक कुछ नहीं होता..। अधिकांश लडाइयों के पीछे कारण एक छोटा सा अहम् ही होता है।

धर्मयोग की साधना से अहम् और वहम् से ऊपर उठकर अर्हम को प्राप्त करो।

तिनसुकिया-असम। ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए वी. शशांक शेखर, ज्वाइंट सेक्रेट्री,मिनिस्ट्री ऑफ होम अफेयर्स,भारत सरकार, ब्र.कु. करुणा, ब्र.कु. शारदा, ब्र.कु. सत्यवती, ब्र.कु. संतोष, पल्लब लोचन दास,पॉवर स्टेट मिनिस्टर, ब्र.कु.शीला, ब्र.कु. विनीता व ब्र.कु. रजनी।

बिलासपुर-छ.ग.। सांसद लखनलाल साहू को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रमा, साथ हैं ब्र.कु. चन्द्रगुप्त तथा ब्र.कु. गंगा।

मऊ-उ.प्र.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान एस.डी.एम. सुरेन्द्र नाथ मिश्रा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विमला। साथ हैं ब्र.कु. आरती व अन्य।

अब्रामा-वलसाड(गुज.)। सेवाकेन्द्र के नये भवन का भूमिपूजन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु.उषा, ब्र.कु.शारदा, मेयर सोनल बहन, ब्र.कु.रंजन, ब्र.कु. रोहित, स्वामीनारायण के भानूभाई, ब्र.कु.किशोर,शिकागो, संगीता बहन व अन्य।

खेड़की-उ.प्र.। गीता पाठशाला के 17वें वार्षिकोत्सव के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. मोहिनी, ब्र.कु. प्रमोद, ब्र.कु. अंजू, ब्र.कु. जगरूप तथा ब्र.कु. बॉबी,माउण्ट आबू।

जारी-बांदा(उ.प्र.)। चरित्रनिर्माण प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् थानाध्यक्ष राजाभइया को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. साधना।